



GURU THIRUVIDAIMARUDUR KUPPIAH KALYANASUNDARAM

Guru Thiruvaidaimarudur Kuppiah Kalyanasundaram hails from a family of Nattuvanar parampara from Thanjavur, traditional dance masters and is known for his contribution to the art of Bharatha Natyam.

2. Born on 1st March, 1932, in Thiruvaidaimarudur, (Thanjavur Dist- Tamil Nadu) Guru Kalyanasundaram learnt Bharatha Natyam from his father Bharatha Vidwan Thanjavur Kuppiah Pillai, his brother Guru T. K. Mahalingam Pillai, brother in law Guru A.T. Govindraj Pillai and sister Smt. Karunambal. He learnt mridangam from his brother Vidwan Sri Marudappa Pillai and Vidwan Sri Raghunathan Iyer; vocal music from Vidushi Smt. Nagalakshmi and Vidwan Alattur Panchapakesa Iyer.

3. Guru Kalyanasundaram ancestors were honoured in the royal courts of Baroda, Mysore, Ramanathapuram and Thanjavur. He conducted the arangetram of his first disciple in 1960, in Mumbai. For the last over seventy years, he has trained innumerable students some of whom are well established dancers in India and abroad. His countless productions both traditional and innovative include – 18th century Thirukuttralla Kuravanji -(Vasanthavalli), Sri Andal - Thiruppaavai, Charanapaduka - based on Tulsidas Ramayan with the music by Sangeet Martand Pt. Jasraj, Skanda Leela, Sri Krishna Leela, Mahatmanjali based on the noble ideals of Mahatma Gandhi and Isai Vani Nrityanjali centenary tribute to M. S. Subbulakshmi (Bharat Ratna awardee) by hundred dancers. He has presented compositions of Great Poets of India. His presentations on Adi Shankaracharya, Sri Purandara Dasa, Sri Thyagaraja, Sri Papanasam Sivan, Sri. G. N. Balasubramaniam, Mahakavi Bharathi (presented at Bharathi's Centenary at his birth place Ettayapuram in 1981) and Saint Purandaradasa (presented on his 500th birth anniversary at New Delhi in 1984) are notable among the presentations of other composers.

4. Guru Kalyanasundaram's other choreographic work includes traditional dance compositions of the Thanjavur Quartet, Thiruvalluvar's Thirukkural, Kambar – Kamba Ramayanam, Elangovar's Silappathikaram, Avvaiyar's Agaval, Gurudev Rabindranath Tagore, Sant Narsi Mehta, Mahakavi Subramanya Bharathi, Sant Tukaram & also the National Poets of Nepal & China.

5. In 1982, along with Guru Govindraj Pillai, Guru Kalyanasundaram led a 30 - member dance troupe to Nepal. In 1986- he had choreographed along with eminent gurus, (of the other classical dance forms), Pt. Birju Maharaj (Kathak), Guru Kelucharan Mohapatra (Odissi) and Guru Vempatti Chinnaasatya (Kuchipudi), a widely acclaimed presentation 'National Integration through Dance'. In 1989, he led a 10 - member dance troupe to participate in the First International Arts Festival of China. He has presented his work at other International dance festivals in Australia, America, Canada, Europe Indonesia, Columbia, Mexico, Japan, Malaysia & Singapore. Guru Kalyanasundaram continues to train a vast number of students and is constantly engaged in choreographing new themes.

6. Guru Kalyanasundaram has been honoured with many awards and titles for his outstanding contribution to the art of Bharatha Natyam. Some of the Awards & titles conferred upon him are the Kalaimamani Award from the Govt. of Tamil Nadu, The Sangeet Natak Akademi Award, elected fellow of The Sangeet Natak Akademi Ratna Sadasya and several titles such as Natya Kalanidhi, Natya Selvam, Naada Brahmam and many more.



गुरु थिरुविडैमरुथुर कुप्पैया कल्याणसुंदरम

गुरु थिरुविडैमरुथुर कुप्पैया कल्याणसुंदरम तंजावुर के नट्टवनर परंपरा के परिवार से हैं, जो पारंपरिक नृत्य गुरु हैं और उन्हें भरतनाट्यम नृत्य कला में अपने योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 1 मार्च, 1932 को थिरुविडैमरुथुर (तंजावुर जिला—तमिलनाडु) में जन्मे, गुरु कल्याणसुंदरम ने भरतनाट्यम अपने पिता भरत विद्वान तंजावुर कुप्पिया पिल्लै, भाई गुरु टी. के. महालिंगम पिल्लै, बहनोई गुरु ए.टी. गोविंदराज पिल्लै और बहन श्रीमती करुणाम्बल से सीखा। उन्होंने मृदंगम अपने भाई विद्वान श्री मरुदप्पा पिल्लै और विद्वान श्री रघुनाथन अय्यर से सीखा; और गायन संगीत विदुषी श्रीमती नागलक्ष्मी और विद्वान अलत्तूर पंचपकेसा अय्यर से सीखा।

3. गुरु कल्याणसुंदरम के पूर्वजों का बड़ौदा, मैसूर, रामनाथपुरम और तंजावुर के राजदरबार में सम्मान किया जाता था। उन्होंने 1960 में मुंबई में अपने पहले शिष्य का अरंगेत्रम किया। पिछले सत्तर से अधिक वर्ष के दौरान, उन्होंने अनगिनत छात्रों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें से कुछ भारत और विदेश में सुस्थापित नर्तक हैं। पारंपरिक और अभिनव दोनों तरह की उनकी असंख्य प्रस्तुतियों में, 18 वीं शताब्दी के तिरुकुट्रल कुरावनजी—(वसंतवल्ली), श्री अंडाल—तिरुप्पावई, तुलसीदास रामायण पर आधारित संगीत मार्तंड पंडित जसराज द्वारा संगीतबद्ध चरणपादुका, स्कंद लीला, श्री कृष्ण लीला, महात्मा गांधी के महान आदर्शों पर आधारित महात्मांजलि और एमएस सुब्बुलक्ष्मी (भारत रत्न पुरस्कृत) की जन्मशताब्दी पर सौ नर्तकियों द्वारा इसाई वाणी नृत्यांजलि शामिल हैं। उन्होंने भारत के महान कवियों की रचनाएं प्रस्तुत की हैं। अन्य कवियों की रचनाओं के अलावा, शंकराचार्य, श्री पुरंदर दास, श्री त्यागराज, श्री पापनाशम सिवन, जी. एन. बालासुब्रमण्यम, महाकवि भारती (1981 में उनके जन्म स्थान एट्टयापुरम में भारती के शताब्दी समारोह में प्रस्तुत) और संत पुरंदरदास (1984 में नई दिल्ली में उनकी 500 वीं जयंती पर प्रस्तुत) पर उनकी प्रस्तुतियां उल्लेखनीय हैं।

4. गुरु कल्याणसुंदरम के अन्य नृत्य निर्देशन कार्यों में, तंजावुर क्वार्टेट, तिरुवल्लुवर का तिरुक्कुरल, कंबर—कंब रामायणम, एलंगोवार का सिलप्पाथिकरम, अवैयार का अगवल, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, संत नरसी मेहता, महाकवि सुब्रमण्य भारती, संत तुकाराम और नेपाल और चीन के राष्ट्रीय कवियों की पारंपरिक नृत्य रचनाएं शामिल हैं।

5. 1982 में, गुरु गोविंदराज पिल्लै के साथ, गुरु कल्याणसुंदरम ने नेपाल में 30 सदस्यीय नृत्य मंडली का नेतृत्व किया। 1986 में उन्होंने प्रख्यात गुरुओं (अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों के), पंडित बिरजू महाराज (कथक), गुरु केलुचरण महापात्र (ओडिसी) और गुरु वेमपट्टी चिन्नासत्यम (कुचिपुड़ी) के साथ एक व्यापक रूप से प्रशंसित प्रस्तुति 'नृत्य के माध्यम से राष्ट्रीय एकता' का नृत्य निर्देशन किया था। 1989 में, उन्होंने चीन के पहले अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सव में भाग लेने के लिए 10 सदस्यीय नृत्य मंडली का नेतृत्व किया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, यूरोप इंडोनेशिया, कोलंबिया, मैक्सिको, जापान, मलेशिया और सिंगापुर के अन्य अंतरराष्ट्रीय नृत्य समारोहों में अपनी प्रस्तुतियां दी हैं। वह बड़ी संख्या में छात्रों को प्रशिक्षित करते रहते हैं और लगातार नए विषयों पर नृत्य प्रस्तुतियां तैयार करने में लगे हुए हैं।

6. गुरु कल्याणसुंदरम को भरतनाट्यम नृत्य कला में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों और उपाधियों से सम्मानित किया गया है। उन्हें प्रदान किए गए पुरस्कारों और उपाधियों में तमिलनाडु सरकार की ओर से कलाईममाणि पुरस्कार; संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; संगीत नाटक अकादमी रत्न सदस्य का निर्वाचित फैलो तथा नाट्य कलानिधि; नाट्य सेत्वम; नाद ब्रह्मम और कई अन्य उपाधियां शामिल हैं।